चौथा किसान स्वराज सम्मलेन

2-4 नवम्बर, 2018, अहमदाबाद

घोषणा एवम संकल्प

देश भर के एक हज़ार से ज्यादा किसान एवम उनके शुभचिंतक,सामाजिक कार्यकर्त्ता, वैज्ञानिक शोधकर्ता, नीतिनिर्माता, आदिवासी, महिला एवम समाज के उपेक्षित समुदायों के लोगों का एक एकत्रीकरन के नाते हम भरपूर आशा और जिम्म्मेदारी से यह महसूस करते है कि हमारे सम्मिलित प्रयासों से एक नए विश्व की रचना संभव है. हजारों प्रजातियों के बीजों का संरक्षण करने वाले, देश के कोने कोने से आये जैविक कृषि करने वाले सफल किसान, प्रकृति के साथ सघन सद्भावना के साथ जीवनयापन करने वाले आदिवासी- वनवासी, महिला किसान, आजीविका और भूमि के मुद्दों पर संघर्ष करने वाले पट्टेदार एवम भूमिहीन किसान सफल उत्पादक संघों में संघटित उत्पादक किसान, टिकाऊ तकनीकों को विकसित करने वाले शोधकर्ता विभिन्न क्षेत्रों से वापस कृषि में जाने की इच्छा रखने वाले उर्जावान नवयुवकों, बाज़ार के तर्क से परे सोचने वाले एवम किसानों के समर्थन में खड़े होने वाले नागरिकों पर आधारित शहरी खपतकारों एवम इसी प्रकार के अन्य रचनात्मक काम करने वालों का इस सम्मलेन में जुटना हमारे लिए असीम आशा, विश्वास एवम उत्साह का विषय है.

परिवर्तन की आकांक्षा रखने वाला यह नया विश्व एक सम्भावना ही नहीं एक अनिवार्यता भी है

- प्रकृति से सुसंगत खेती करने वाले किसान जो फसलों और पशुधन की विविधता को बनाये रखते है. जो किसान मिट्टी, पानी एवम खेत की पारिस्थिकी को लगातार मज़बूत करते है, जो किसान जहरीली रासायनिक उद्योगों से नहीं बल्कि एक सजीव जैविक प्रणाली से खेत में डालने वाले खादों और अन्य सामग्री को ग्रहण करते है, जो किसान पशुधन के संरक्षण एवम पोषण को टिकाऊ खेती में एक एकात्म भूमिका प्रदान करते है वे इस एक नयी संरचना के हिस्से है.
- बीजों की विविधता और बीजों का ये तंत्र बिना किसी एकाधिकार के किसानों के हाथों में ही संरक्षित एवम संवर्धित हो रहे है. किसानों द्वारा जैविक कृषि और जैव विविधता से विकसित प्रकृति की उदारता के समान सबके लिए उपलब्ध यह बीज जलवायु परिवर्तन के आघात को सहने की भी क्षमता रखते है.
- इस नए और अलग विश्व में वर्षा आधारित क्षेत्रों में नमी को संरक्षित रखते हुए सिंचाई एवम उचित कृषि चक्कर को अपनाकर यह टिकाऊ खेती की यह प्रणाली भूमिगत जल और भूजल का विवेकपूर्वक यथायोग्य उपयोग करते हुए पर्यावरण को समृद्ध और संरक्षित कर रही है.
- कृषिकर्म एवम शारीरिक परिश्रम एक सम्मानित और प्रकृति से जुड़ी हुई जीवनशैली एवम आजीविका है जो मानव सभ्यता को चिरंजीवी बनाने में महत्ती भूमिका निभा रही है. फसलों, पशुधन एवम वनोपज पर आधारित एवम इनको उचित मूल्य देनेवाली एक नयी आर्थिक प्रणाली इस अलग विश्व का हिस्सा है. इस अलग विश्व में व्यापर एवम सामान का आदान प्रदान एवम सेवाएँ शोषण से मुक्त एवम टिकाऊ होंगे.
- इस अलग विश्व में लघु एवम सीमांत किसान कृषि और कृषि से संबधित एक उचित आय प्राप्त करके एक सम्मानजनक जीवन का निर्वाह करेंगे.
- किसान न सिर्फ कर्ज से मुक्त हो बल्कि उन्हें उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए एक सामाजिक सुरक्षा का तंत्र प्रदान किया जाये. वित्तीय संस्थानों का नियमन एवम नियंत्रण समुदाय करें.
- भूमि सीधा खेती करने वालों के हाथ में हो एवम शामलात ज़मीन एवम सामुदायिक संसाधनों पर समुदायों का ही हक्क हो जिसे कानून का संरक्षण प्राप्त हो. किसानो से कभी भी ज़मीन उनकी इच्छा के विरुद्ध न ली

जाये. जोताई करने वाले और जिनमे पट्टेदार किसान भी शामिल हो उन्हें यह अधिकार हासिल हो. कृषि एवम अन्य क्षेत्रों में भूमि के पर्योग को ले के एक उचित संतुलन बनाया जाये.

- महिलाओं को किसान माना जाये एवम एक किसान के नाते भूमि और में उनके अधिकारों का सरंक्षण किया जाये जिसमें परिवार, गाँव, समुदाय और व्यापक सत्र पर निर्णय प्रक्रिया में उनकी भूमिका प्रशस्त हो.
- आदिवासी और वनवासियों द्वारा जंगल की ज़मीन और उसकी उपज पर उनके सामुदायिक अधिकारों का संरक्षण हो और उनका शोषण रोका जाये.
- छोटे किसानों की उपज के उचित मंडीकरण, प्रसंस्करण को प्रभावशाली उत्पदाकसंघों में संघटित करके सीधा खपतकारों से जोड़ा जाये. जिससे छोटे किसान जो टिकाऊ ढंग से उगा सकते है उसकी शर्तें वे स्वयं तय कर सके और उसे उचित दम पर बेच सकें.
- कुपोषण से मुक्ति के लिए सुरक्षित, ज़हरमुक्त एवम पोषणकारी भोजन हर व्यक्ति और हर बच्चे को उपलब्ध हो.
- हर नागरिक शहरी अथवा ग्रामीण अपने अन्नदाता और उत्पादकों की महत्वपूर्ण भूमिका को समझता है. यह नागरिक इस के लिए कृषि को एक आजीविका के नाते सम्मान प्रदान करते हुए किसान को उसकी उपज का उचित मूल्य देने को तैयार है. नागरिको का यह समूह किसानों के न्याय और आजीविका के उनके संघर्ष में हर तरह से सहभागी है और इस संघर्ष को मजबूत करने के लिए तन, मन, धन से तत्पर है.

ऐसे विश्व की कलपना न सिर्फ वांछनीय है बल्कि सभ्यता को जीवत रखने के लिए आवश्यक भी है. हम यह विश्वास करते है कि पूरे विश्व में ऐसा न्यायकारी समाज एवम अर्थव्यवस्था बनाने में भारत की एक अप्रतिम भूमिका है. हम सभी सरकारों को आह्वाहन करते है कि वे इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी भूमिका निभाएं.

<u>विशेषरूप से सरकारों को ऐसी नीतियाँ एवम कानून अपनाने चाहिए जो</u>

- टिकाऊ एवम प्रकृति खेती को प्रोत्साहन देने के लिए एक अवशयक नीतिगत बदलाव लायें.
- यह सुनिश्चित किया जाये कि कृषि संसाधन जल, जंगल, ज़मीन और बीजो पर किसानों, खेतिहर मजदूरों, पट्टेदारी किसानों, महिलाओं, आदिवासी-वनवासियों के अधिकार सुरक्षित रहेंगे. इन अधिकारों और संसाधनों को कॉरपोरेट कभी अधिग्रहित न कर सके.
- यह सुनिश्चित किया जाये कि अलग अलग प्रयासों से सभी कृषि करने वाले घर-परिवारों को न्यूनतम प्रतिष्ठित आय मिले जिसमें उचित मूल्य, कर्ज तक पहुँच, बीमा, आपदा राहत, अनुकूल व्यापर नीतियाँ, किसानों के उत्पादक संघों और उचित सामाजिक सुरक्षा शामिल हो.
- कृषक समुदायों और खासकर सीमांत किसानों, आदिवासियों, भूमिहीन कामगारों , महिलाओं एवम पट्टेदारों किसानों का शोषण बंद हो.
- यह सुनिश्चित किया जाये कि सुरक्षित, ज़हरमुक्त एवम पोषणकारी भोजन हर व्यक्ति को उपलब्ध हो.

सरकार को सभी कानून जो कि बने हुए है उनको कृषि समुदायों के संरक्षण के लिए लागू करना चाहिए जिसमे भूमि अधिग्रहण नियम २०१३, भूमि सुधार कानून, जंगल अधिकार कानून, MGNREGA और वातावरण संरक्षण कानून शामिल है.

हम कृषि समुदाएँ, पूरा समाज और सरकारों को आमंत्रित करते है कि यह एक सभ्यता का संकट है जिस के लिए हम सबको अपना कर्त्तव्य और जिम्मेदारी निभानी होगी. हम संकल्प लेते है कि हम सभी अपने पूरे दिल और अपनी पूरा ऊर्जा से ऐसे विश्व का निर्माण करेंगे और यह हमारी स्वराज की तरफ़ यात्रा है.